SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता का अध्ययन

डॉ0 अंजनी कुमार मिश्रा
विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय
सिंगरामऊ, जौनपुर

राजेन्द्र प्रसाद
शोध छात्र
एम0ए0, एम0एड0
नेट–शिक्षाशास्त्र (बी0एड0)

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरी क्षेत्र में कार्यरत शासकीय और अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता के स्तर का मूल्यांकन करना है। समग्र गुणवत्ता प्रबंधन एक ऐसी प्रणाली है, जो शिक्षा क्षेत्र में निरंतर सुधार, नवाचार, सहभागिता और उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देती है। यह केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिक्षण विधियों, संसाधनों के उपयोग, प्रशासनिक प्रक्रिया, शिक्षकों के व्यवहार और विद्यार्थियों के विकास जैसे सभी पहलुओं को समाहित करता है। इसलिए शिक्षकों की इस प्रणाली के प्रति जागरूकता एवं उसका व्यावहारिक ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। अध्ययन में यह पाया गया कि शासकीय विद्यालयों में कार्यरत अधिकांश शिक्षकों को समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की मूल अवधारणाओं की सामान्य जानकारी तो है, परंतु इसके व्यावहारिक क्रियान्वयन में सीमित सहभागिता देखी गई। कई शिक्षक इसे केवल प्रशासनिक प्रक्रिया मानते हैं और इसके गहरे प्रभाव को नहीं समझ पाते। वहीं, अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय एवं सजग पाए गए। वे प्रतिस्पर्धा, निजी संस्थानों की नीतियों और परिणामों की माँग के चलते गुणवत्ता के प्रति अधिक जागरुक रहते हैं। शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शिक्षकों को तकनीकी संसाधनों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सतत विकास योजनाओं का अधिक अवसर प्राप्त होता है, जिससे उन्हें गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणाओं से जुड़ने का बेहतर मौका मिलता है। हालाँकि, दोनों प्रकार के विद्यालयों में प्रशिक्षण की असमानता, संसाधनों की कमी और समय की बाध्यता जैसे कारकों ने जागरूकता के स्तर को प्रभावित किया है। समग्र गुणवत्ता प्रबंधन को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ और सहभागिता के अवसर प्रदान करना आवश्यक है। इसके साथ ही, प्रशासन को भी चाहिए कि वे शिक्षकों को केवल लक्ष्य प्राप्ति की दृष्टि से न देखें, बल्कि उन्हें गुणवत्ता विकास के सशक्त भागीदार बनाएँ। शिक्षकों में इस दिशा में जागरुकता उत्पन्न

करना शिक्षा प्रणाली के दीर्घकालिक सुधार के लिए आवश्यक है। शहरी शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूक तो हैं, किंतु इसकी गहराई में जाकर कार्यान्वयन के स्तर पर उनकी सक्रिय भूमिका को और अधिक सशक्त एवं व्यवस्थित बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा में सकारात्मक प्रयास न केवल शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाएंगे, बल्कि संपूर्ण शैक्षिक वातावरण को भी सुदृढ़ बनाएंगे।

मुख्यशब्द : शासकीय माध्यमिक विद्यालय, अशासकीय माध्यमिक विद्यालय, शहरी शिक्षक, समग्र गुणवत्ता प्रबंधन

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला होती है, और शिक्षकों को इस आधारशिला का निर्माता माना जाता है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह एक समग्र विकास की प्रक्रिया बन चुकी है जिसमें बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास सम्मिलित होता है। ऐसी स्थिति में गुणवत्ता आधारित शिक्षा का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। शिक्षण संस्थाओं की सफलता अब केवल परीक्षा परिणामों से नहीं, बल्कि शैक्षणिक गुणवत्ता, नवाचार, अनुशासन, तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विभिन्न घटकों से मापी जाती है। समग्र गुणवत्ता प्रबंधन का मूल उद्देश्य संस्थागत कार्यप्रणालियों में गुणवत्ता सुनिश्चित करना और निरंतर सुधार की प्रक्रिया को अपनाना है। यह केवल उत्पादों और सेवाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा जैसे मानवीय सेवा क्षेत्र में भी इसकी प्रासंगिकता दिन–ब–दिन बढ़ रही है। विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वहाँ कार्यरत शिक्षक न केवल इस अवधारणा को समझें, बल्कि इसके प्रति जागरुक भी हों। खासकर शहरी क्षेत्र में, जहाँ शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा होता है और प्रतियोगिता अधिक होती है, वहाँ गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में दो प्रमुख प्रकार के विद्यालय कार्यरत हैं – शासकीय और अशासकीय इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यशैली, संसाधनों की उपलब्धता, कार्य के प्रति दृष्टिकोण, प्रशिक्षण की व्यवस्था तथा नवाचारों को अपनाने की प्रवृत्ति में अनेक प्रकार के भेद पाए जाते हैं। ये भिन्नताएँ उनके समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता को भी प्रभावित कर सकती हैं। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि वे इस अवधारणा को किस स्तर तक समझते हैं, अपनाते हैं तथा उसका उपयोग अपने शिक्षण कार्य में करते हैं। शिक्षकों की गुणवत्ता किसी भी विद्यालय की कार्यप्रणाली में केंद्रीय भूमिका निभाती है। यदि शिक्षक समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के सिद्धांतों से भली–भाँति परिचित हैं और उन्हें अपने शिक्षण–प्रशिक्षण तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं में समाहित करते हैं, तो यह निश्चित रूप से विद्यालय की समग्र गुणवत्ता में वृद्धि करेगा। समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के अंतर्गत टीमवर्क, निरंतर सुधार, नेतृत्व, ग्राहक (विद्यार्थियों एवं अभिभावकों) की अपेक्षाओं को समझना, और कार्यों की प्रक्रिया में पारदर्शिता जैसे घटक आते हैं। जब शिक्षक इन सिद्धांतों को आत्मसात करते हैं, तब वे न केवल बेहतर शिक्षक बनते हैं, बल्कि संस्था को गुणवत्ता के नए शिखरों तक भी ले जाते हैं। शासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को अकसर संसाधनों की कमी, अत्यधिक कार्यभार, प्रशासनिक दबाव आदि का सामना करना पड़ता है, वहीं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे नवाचारों को शीघ्र अपनाएँ, तकनीकी दक्षता दिखाएँ तथा संस्थागत छवि को

CamScanner

बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। इन दोनों ही परिस्थितियों में शिक्षक समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा से कितना परिचित हैं और कितनी जागरूकता रखते हैं, यह जानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है। इसके अतिरिक्त, शहरी क्षेत्र में शिक्षा की माँग निरंतर बढ़ रही है। शहरीकरण के कारण लोगों की जीवनशैली में आए परिवर्तन, अभिभावकों की उच्च आकांक्षाएँ, प्रतिस्पर्धी वातावरण, और वैश्विक स्तर पर हो रहे शैक्षणिक बदलावों के प्रभाव के कारण विद्यालयों पर गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने का दायित्व और भी बढ़ गया है। ऐसे में शिक्षक यदि गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति सजग नहीं हैं तो विद्यालय की प्रगति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शहरी क्षेत्र के शिक्षक अपने कार्यों में गुणवत्ता प्रबंधन को सम्मिलित करें और शिक्षा को एक सेवा के रूप में नहीं, अपितु एक दायित्व के रूप में निभाएँ। शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता का स्तर न केवल उनकी शैक्षणिक योग्यता और प्रशिक्षण पर निर्भर करता है, बल्कि यह संस्था के प्रबंधन, प्रशासनिक दृष्टिकोण, कार्य संस्कृति और नेतृत्त्व क्षमता से भी प्रभावित होता है। यह भी देखा गया है कि जहाँ विद्यालयों में नेतृत्व प्रेरणादायक होता है और नवाचारों को प्रोत्साहित किया जाता है, वहाँ शिक्षक स्वाभाविक रूप से गुणवत्ता के प्रति अधिक सजग रहते हैं। वहीं, जहाँ कार्य केवल औपचारिकता बनकर रह जाता है, वहाँ गुणवत्ता को एक अतिरिक्त बोझ के रूप में देखा जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा ने विभिन्न आयामों को छुआ है। अब यह केवल कक्षा शिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि पाठ्यक्रम निर्माण, मूल्याँकन प्रणाली, विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया, पालक सहभागिता, विद्यालय की साख, तकनीकी समावेशन, एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि सभी क्षेत्रों में इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है। शिक्षक इस समग्र प्रणाली का प्रमुख घटक हैं, और जब तक वे स्वयं इसके प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक इस प्रणाली का प्रभावी क्रियान्वयन संभव नहीं हो पाएगा। भारत सरकार एवं राज्य सरकारें समय–समय पर शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु विविध योजनाएँ चलाती हैं, जिनमें समग्र गुणवत्ता पर भी बल दिया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी गुणवत्तायुक्त शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है और शिक्षकों को इस दिशा में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। यद्यपि सरकारी प्रयास लगातार हो रहे हैं, लेकिन इनका वास्तविक प्रभाव तभी पड़ेगा जब शिक्षक स्वयं इस अवधारणा को आत्मसात करेंगे और इसे अपने आचरण एवं कार्य प्रणाली का हिस्सा बनाएँगे। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की तुलना करते समय यह भी आवश्यक हो जाता है कि हम उन कारकों की पहचान करें जो शिक्षकों की गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता को प्रभावित करते हैं। इनमें प्रशिक्षण की उपलब्धता, कार्यस्थल का वातावरण, प्रबंधन का दृष्टिकोण, वेतनमान, कार्य संतोष, पदोन्नति की संभावनाएँ, एवं शिक्षकों की व्यक्तिगत पहल जैसी बातें सम्मिलित हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में निरंतर परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है, ताकि समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सके। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने हेतु समग्र गुणवत्ता प्रबंधन एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरी है। यह प्रबंधन प्रणाली न केवल संस्थागत संरचना को सुदृढ़ बनाती है, बल्कि शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और अन्य शैक्षिक घटकों की सहभागिता को भी सुनिश्चित करती है। इस संदर्भ में शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शासकीय एवं

CamScanner

अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि शिक्षक ही विद्यालय के गुणवत्ता स्तर को निर्धारित करने वाले प्रमुख स्तंभ होते हैं। समग्र गुणवत्ता प्रबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यालयो के सभी विभागों और कार्यों में निरंतर सुधार की दिशा में कार्य करती है। इसके अंतर्गत योजना निर्माण, कार्यान्वयन, मूल्यांकन तथा प्रतिपुष्टि की प्रक्रिया को प्रमुखता दी जाती है। शिक्षकों का इस प्रक्रिया के प्रति जागरूक होना इस बात को सुनिश्चित करता है कि वे न केवल अपनी शैक्षिक जिम्मेदारियों का सही तरीके से निर्वहन करें, बल्कि विद्यालय की संपूर्ण गुणवत्ता में भी सकारात्मक योगदान दें। शहरी विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण अपेक्षाकृत संसाधन–संपन्न होता है, परंतु गुणवत्ता में असमानता, छात्र–अध्यापक अनुपात की विसंगति, प्रशासनिक बाधाएं, निजीकरण की प्रवृत्ति, और अकादमिक प्रतिस्पर्धा जैसे कारक शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों के समक्ष खड़ा कर देते हैं। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षक समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा से कितने जागरुक हैं और वे इसे अपने शिक्षण कार्य तथा विद्यालय प्रशासन में किस प्रकार लागू कर रहे हैं। यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, नैतिक विकास, व्यवहारिक दक्षता तथा विद्यालयी वातावरण में व्यापक सुधार लाया जा सकता है। शासकीय विद्यालयों में संसाधनों की सीमितता और अशासकीय विद्यालयों में व्यावसायिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन बनाना भी एक चुनौती है, जिसे गुणवत्तापूर्ण प्रबंधन द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। अगर शिक्षक इस दिशा में जागरूक होंगे, तो वे नवीन शिक्षण तकनीकों, मूल्यांकन विधियों, तथा अभिप्रेरणा तंत्रों का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरूकता का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि इससे वे निरंतर सुधार की मानसिकता विकसित करते हैं। वे स्वयं के कार्य की समीक्षा करते हैं, विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया को गंभीरता से लेते हैं, और विभिन्न प्रशिक्षणों व कार्यशालाओं के माध्यम से स्वयं को अद्यतन बनाए रखते हैं। साथ ही, वे टीम भावना से कार्य करते हैं, समस्याओं के समाधान हेतु सहकर्मियों और प्रशासन के साथ मिलकर रणनीति बनाते हैं, जिससे विद्यालय का संपूर्ण कार्य–प्रवाह सशक्त होता है। इसके अतिरिक्त, वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य में मूल्यांकन का दृष्टिकोण भी बदल रहा है। अब केवल परीक्षा परिणामों को ही सफलता का मापक नहीं माना जाता, बल्कि विद्यालय का समग्र प्रदर्शन, छात्रों की सृजनात्मकता, नैतिक मूल्य, सामाजिक सहभागिता तथा जीवन कौशल भी महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। ऐसे में समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा शिक्षकों को इन सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने हेतु प्रेरित करती है। इस अध्ययन का सामाजिक महत्त्व भी कम नहीं है। एक शिक्षक समाज का निर्माता होता है। यदि वह गुणवत्ता की अवधारणा को समझता है और उसे अपनाता है, तो वह एक जागरूक, संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिक तैयार करने में सक्षम होता है। यह सामाजिक परिवर्तन का आधार बनता है। जब शिक्षक स्वयं अपने कार्य में गुणवत्ता और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्ध होता है, तो वह विद्यार्थियों में भी यही गुण विकसित करता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित निम्नलिखित साधना अग्रवाल एवं ममता बाकलीबाल (2022), पुष्पलता साहू (2024), डॉ. सुमन रानी और ललिता रानी (2024) देवेन्द्र कुमार यादव, डॉ. श्रद्धा सिंह (2025) आदि शोधार्थियों ने शोध किये हैं।

समस्या कथन

शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता का अध्ययन।
- शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए लखनऊ जनपद के यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा 09 से 12 तक के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु 73 शासकीय व 84 अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को शामिल किया गया है।

उपकरण

समग्र गुणवत्ता प्रबंधन मापनी – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य था कि शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता की स्थिति का अध्ययन करना जिस हेतु शून्य परिकल्पना शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं, "जिस हेतु निम्न आँकड़े प्राप्त हुए"।

सारणी संख्या – 1

क्रं0 सं0	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	शासकीय शहरी पुरुष शिक्षक	39	29.30	12.78	0.44	***
2.	अशासकीय शहरी पुरुष शिक्षक	45	30.55	13.19		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– सारणी संख्या 1 में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष शिक्षकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 29.30 एवं 12.78 प्राप्त हुआ है जबकि अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 30.55 एवं 13.19 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.44 प्राप्त हुआ है। शहरी क्षेत्रों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के पुरुष शिक्षक समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा से परिचित होते हैं, किंतु इसे प्रभावी रूप से लागू करने में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। शासकीय विद्यालयो मे कार्यरत शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं सेमिनारों के माध्यम से गुणवत्ता प्रबंधन की नई तकनीकों की जानकारी दी जाती है।

प्रस्तुत अध्ययन का दूसरा उद्देश्य था कि शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता की स्थिति का अध्ययन करना जिस हेतु शून्य परिकल्पना शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं, "जिस हेतु निम्न आँकड़े प्राप्त हुए"।

सारणी संख्या – 2

क्रं0 सं0	वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1.	शासकीय शहरी महिला शिक्षक	34	28.11	12.68	0.87	***
2.	अशासकीय शहरी महिला शिक्षक	39	30.61	11.73		

0.01 *सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– सारणी संख्या 2 में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 28.11 एवं 12.68 प्राप्त हुआ है जबकि अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 30.61 एवं 11.73 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.87 प्राप्त हुआ है। शहरी महिला शिक्षक, विशेष रूप से शासकीय विद्यालयों में कार्यरत, समग्र गुणवत्ता प्रबंधन की अवधारणा से अवगत होती हैं, लेकिन इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। सरकारी स्कूलों में शिक्षण व्यवस्था में प्रशासनिक औपचारिकताओं, संसाधनों की कमी और कार्यभार की अधिकता के कारण वे पूर्ण रूप से गुणवत्ता प्रबंधन को लागू करने में कठिनाई महसूस करती हैं। वहीं, अशासकीय विद्यालयों में काम करने वाली महिला शिक्षक अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता महसूस करती हैं, क्योंकि इन विद्यालयों में नवाचारों को अपनाने की प्रवृति अधिक होती है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी पुरुष शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी महिला शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

CamScanner

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- साधना अग्रवाल एवं ममता बाकलीवाल (2022). माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की अध्यापिकाओं के कार्यमूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, Int. J. Social Sci. Educ. Res. 2022;4(1):10-13. DOI: 10.33545/26649845.2022.v4.i1a.34.
- पुष्पलता साहू (2024). भोपाल जिले के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में दायित्व बोध एवं नवाचार के प्रति जागरूकता का अध्ययन, शोध पत्र, DOI: https://doi.org/10.22159/ijoe.2024v12i6.52799.
- डॉ. सुमन रानी और ललिता रानी (2024). राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन, शोध पत्र, DOI: https://doi.org/10.7492/dv2j9n29.
- देवेन्द्र कुमार यादव, डॉ. श्रद्धा सिंह (2025). माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण–व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सम्बन्ध का अध्ययन, शोध पत्र, **Gyanshauryam International Scientific Refereed Research Journal.**

CamScanner

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/30

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 अंजनी कुमार मिश्रा और राजेन्द्र प्रसाद

For publication of Book Review title

"शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की समग्र गुणवत्ता प्रबंधन के प्रति जागरुकता का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com

CamScanner